MAHARAJA SUHELDEV

Maharaja Suheldev was a legendary Indian king of Shravasti, who is said to have defeated and killed the Ghaznavid general Ghazi Saiyyad Salar Masud in the early 11th century. The legend of Salar Masud and Maharaja Suheldev is found in the text Mirat-i-Masudi. It is a historical romance, and a biography of Salar Masud written by Abd-ur-Rahman Chishti during the reign of the Mughal emperor Jahangir (1605-1627).

According to the legend, Maharaja Suheldev was the eldest son of King Mordhwaj of Shravasti. Ghazi Saiyyad Salar Masud, a nephew of Mahmud of Ghazni, invaded India at the age of 16. He crossed the Indus river, and conquered Multan, Delhi, Meerut and finally Satrikh in Uttar Pradesh. At Satrikh, he established his headquarters, and dispatched armies to defeat the local kings. Sayyad Saif-ud-din and Mian Rajjab were dispatched to Bahraich. The local Raja of Bahraich and other neighbouring kings formed a confederation, but an army led by Masud's father Gazi Saiyyed Salar Sahu defeated them. Nevertheless, they continued to threaten the invaders, and therefore, in 1033 CE, Masud himself arrived in Bahraich to check their advance. Masud inflicted defeat after defeat on his enemies, until the arrival of Maharaja Suheldev. Maharaja Suheldev's army defeated Masud's forces, and Masud was killed in a battle in 1034 CE.

Maharaja Suheldev is remembered for his kindness and compassion and as a patron of saints. In one of these versions of the battle between Maharaja Suheldev and Salar Masud, Salar Masud planned to place a herd of cattle in front of his army, so that Maharaja Suheldev could not attack him. Maharaja Suheldev came to know about this plan, and released the cattle on the night before the battle, thus defeating his enemy in the battle of wits before the actual battle begins.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Maharaja Suheldev.

Credits :

Text : Based on the information available on internet

Stamp/ First Day Cover/ Brochure/ Cancellation Cachet : Smt Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग

Department of Posts India

महाराजा सुहेलदेव
MAHARAJA SUHELDEV

विवरणिका

BROCHURE

महाराजा सुहेलदेव

महाराजा सुहेलदेव, श्रावस्ती के सुप्रसिद्ध राजा थे। कहा जाता है कि उन्होंने 11वीं शताब्दी की शुरुआत में गजनवी के सेनापति गाजी सैयद सालार मसूद को पराजित कर मौत के घाट उतारा था। सालार मसूद और महाराजा सुहेलदेव की गाथा का उल्लेख मिरात-ए-मसूदी में मिलता है। मिरात-ए-मसूदी, मुगल बादशाह जहांगीर के शासनकाल (1605-1627) के दौरान अब्द-उर-रहमान चिश्ती द्वारा लिखी गई ऐतिहासिक प्रेमकथा तथा सालार मसूद की जीवनी है।

किंवदंती के अनुसार, महाराजा सुहेलदेव श्रावस्ती के राजा मोरध्वज के ज्येष्ठ पुत्र थे। महमूद गजनी के भतीजे गाजी सैयद सालार मसूद ने 16 वर्ष की आयु में भारत पर आक्रमण किया। उसने सिंधु नदी को पारकर मुलतान, दिल्ली, मेरठ और उत्तर प्रदेश के सतरिख पर फतह हासिल की। सालार मसूद ने सतरिख को अपना मुख्यालय बनाया और स्थानीय राजाओं को परास्त करने के लिए अपनी फौजों को रवाना किया। इसी मकसद से सैयद सैफुद्दीन और मियां रज्जब को बहराइच भेजा गया। बहराइच के राजा तथा पड़ोसी राजाओं ने एकजुट होकर हमलावरों का सामना किया। परंतु, मसूद के पिता गाजी सैयद सालार साहू के नेतृत्व वाली सेना ने इन राजाओं को पराजित कर दिया। इस हार के बावजूद इन राजाओं ने हमला करना जारी रखा। इसके परिणाम स्वरुप इन्हें रोकने के उद्देश्य से 1033 ई. में मसूद को स्वयं बहराइच आना पड़ा। मसूद अपने दुश्मनों को जंग में एक के बाद एक मात देता गया, जब तक कि महाराजा सुहेलदेव युद्ध के मैदान में नहीं उतरे। महाराजा सुहेलदेव की सेना ने मसूद की सेना को परास्त करने में कामयाबी हासिल की और 1034 ई. में युद्ध के दौरान मसूद को मार गिराया गया।

महाराजा सुहेलदेव को उनके दयाभाव, करुणा तथा साधु-संतों के संरक्षक के रूप में जाना जाता है। महाराजा सुहेलदेव और सालार मसूद के बीच हुए एक युद्ध के बारे में कहा जाता है कि सालार मसूद ने अपनी सेना के आगे पशुओं के झुंड को खड़ा करने की योजना बनाई ताकि महाराजा सुहेलदेव उसकी सेना पर आक्रमण न कर सकें। जब महाराजा सुहेलदेव को इस रणनीति के बारे में पता चला तो उन्होंने युद्ध से एक दिन पहले रात्रि के समय सभी पशुओं को खोलकर भगा दिया। इस प्रकार, महाराजा सुहेलदेव ने वास्तविक युद्ध प्रारंभ होने से पहले ही शत्रु को अपनी चतुराई से मात दे दी।

डाक विभाग, महाराजा सुहेलदेव पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :

पाठ	:	इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/ विरूपण मुहर	:	श्रीमति अलका शर्मा

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक-टिकटें	:	5.0 लाख
Stamps Printed	:	0.5 million
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00